जेण्डर प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

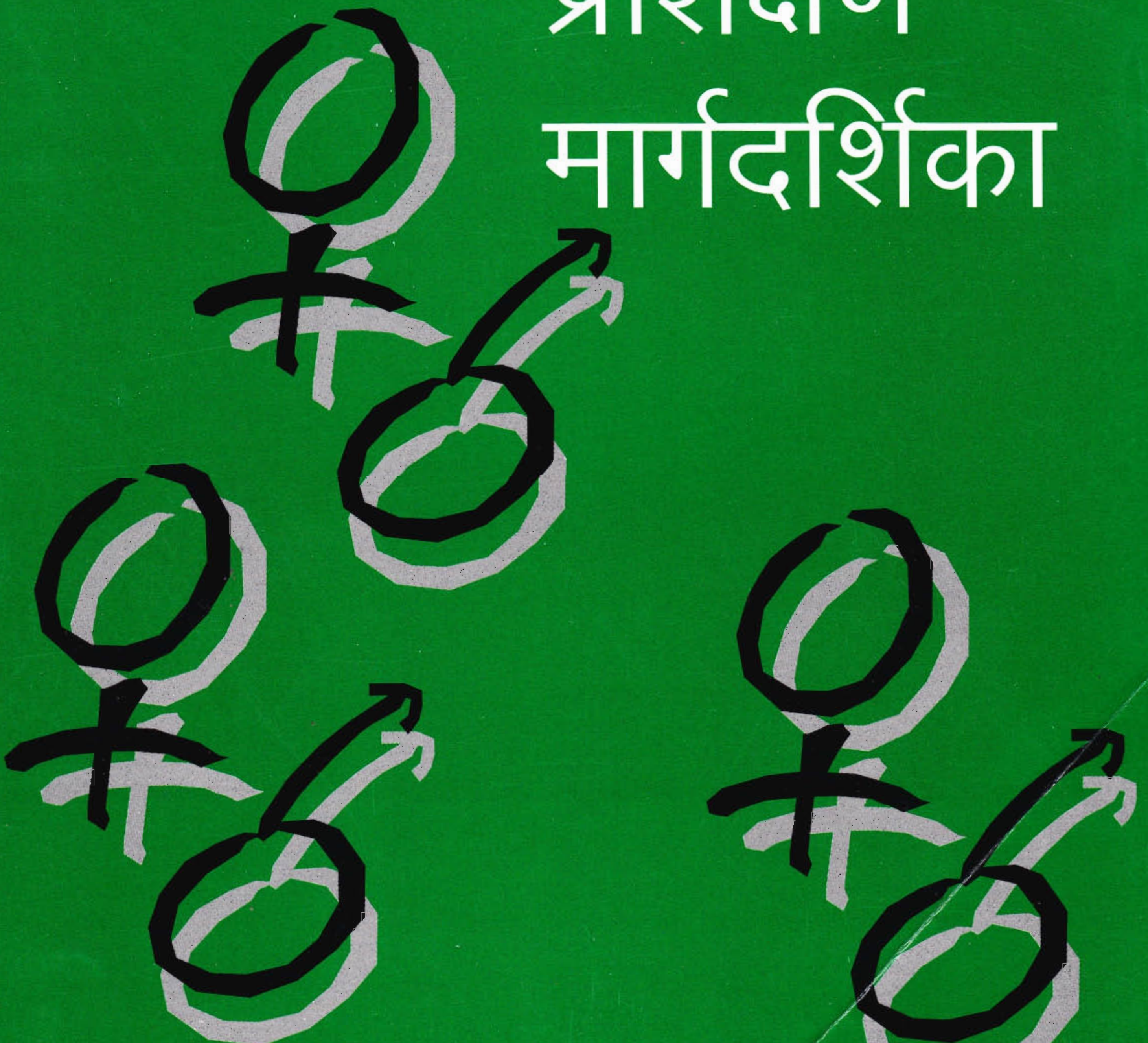

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर

जेण्डर प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

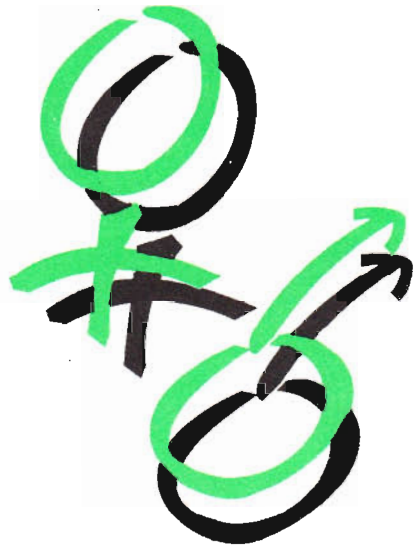

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर

महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर., इन्दौर - 452 010

फोन : 2551917, 2574104 फैक्स : 2551573

E-Mail : srcmp@sancharnet.in, Literacy@satyam.net.in

जेण्डर प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

संस्करण - द्वितीय, जुलाई 2005

प्रतियाँ - 1000

मूल्य - रु. 21.00

जनसंख्या एवं विकास शिक्षा के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रकाशक - राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर.
इन्दौर - 452 010
फोन - 0731-2551917, 2574104
फैक्स - 0731-2551573
ईमेल - srcmp@sancharnet.in, Literacy@satyam.net.in

मुद्रक - मे. सिद्धार्थ ऑफसेट
81, रवीन्द्र नगर
इन्दौर - 452 001
फोन - 0731-2493745

आमुख

हमारे देश में महिला-पुरुषों के बीच भेदभाव आदिकाल से परिलक्षित होता आ रहा है। लिंग संबंधी असमानता हर कार्यक्षेत्र जैसे-आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक आदि पर हमेशा से हावी रही है। इसी के चलते हमारे देश को पुरुष प्रधान देश भी कहा जाता रहा है। इस असमानता का सीधा प्रभाव महिला वर्ग के जीवन के हर पहलू पर होता है।

आज, जबकि महिला एवं पुरुषों की भूमिकाओं व कार्यक्षेत्रों में समानता आई है, समाज के हर वर्ग में जेण्डर की समझ विकसित करना आवश्यक हो गया है।

इसी उद्देश्य से केन्द्र द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में यूनिसेफ एवं मध्यप्रदेश की कई स्वैच्छिक संस्थाओं व डाइट के प्रतिनिधि शामिल हुए। सभी प्रतिभागियों ने स्व-प्रयत्नों से जेण्डर की समझ विकसित करने में समर्थ इस मार्गदर्शिका का निर्माण किया। इस मार्गदर्शिका का प्रशिक्षणार्थियों के बीच परीक्षण 3 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान किया गया। परीक्षण से प्राप्त सुझावों के अनुसार इसमें संशोधन भी किए गए। मार्गदर्शिका को अंतिम स्वरूप प्रदान करने का कार्य **श्रीमती अंजली अग्रवाल, श्री अखिल दुबे** व **श्रीमती प्रज्ञा यादव** ने किया है। यूनिसेफ भोपाल की कार्यक्रम अधिकारी **डॉ. डी. सरलाराव** ने मार्गदर्शिका के निर्माण में विशेष रूप से सहयोग प्रदान किया।

आशा है विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी प्रशिक्षक इस मार्गदर्शिका का उपयोग कर अपने समूह में जेण्डर की समझ विकसित करने में सफल होंगे।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, म.प्र.,
इन्दौर

जेण्डर प्रशिक्षण मार्गदर्शिका -

परिचय

हम महिला हैं या पुरुष, इसका प्रभाव जन्म से लेकर हमारे जीवन के हर पहलू पर पड़ता है। जीवन पटल को प्रभावित करने वाले घटकों को समझने के लिए जेण्डर की समझ आवश्यक है। किसी भी संस्कृति व स्थान के आधार पर महिला व पुरुष के लिए निर्धारित भूमिकाओं व अंतर्सम्बन्धों में भिन्नता रहती है जो समाज द्वारा निर्धारित होती है। इसे हम जेण्डर के रूप में जानते हैं। यह भूमिकाएँ हमारे कार्यों को प्रभावित करती हैं व सभी के लिए अवसरों की उपलब्धता को भी निर्धारित करती हैं।

विकास क्षेत्र में कार्य करने के लिए जेण्डर को समझना और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विकास कार्यों का विश्लेषण कर हम योजनाओं को अधिक सार्थक स्वरूप प्रदान कर सकते हैं व एक ऐसे समाज की संरचना कर सकते हैं जहाँ सभी को समान अधिकार प्राप्त हों। सभी की संसाधनों व विकास के लाभों तक बराबर की पहुँच हो व समान रूप से नियंत्रण हो।

जेण्डर असमानता, विशेषकर महिलाओं को उनके पूरे जीवन चक्र में स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार के अवसरों को अधिक प्रभावित करती है। इससे विकास में उनकी भागीदारी व उससे होने वाले लाभों का दायरा भी महिलाओं के लिए सीमित हो जाता है। समुदाय में जेण्डर समझ विकसित करने के उद्देश्य से इस प्रशिक्षण मार्गदर्शिका का निर्माण किया गया है।

उपयोग किनके लिए -

- इस मार्गदर्शिका का उपयोग सभी स्वैच्छिक संस्थाओं/संगठनों के कार्यकर्ता अपने प्रशिक्षण के दौरान कर सकते हैं।
- विकास कार्य से संबंधित विभाग अथवा व्यक्ति भी जेण्डर संबंधी प्रशिक्षण देने के लिए इस मार्गदर्शिका का उपयोग कर सकते हैं।
- साक्षरता एवं विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यक्ति, संस्था अथवा संगठन जेण्डर संबंधी जागरूकता हेतु इस मार्गदर्शिका का उपयोग कर सकते हैं।

अनुभवात्मक सीख

इस मार्गदर्शिका में जिस प्रणाली का प्रयोग किया गया है वह **अनुभवात्मक सीख** है। इस सहभागी तथा पारस्परिक प्रणाली के अंतर्गत सहभागी अपने स्वयं के अनुभवों से सीख पाते हैं और प्रशिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में होता है।

हर सत्र, अनुभवात्मक सीख मॉडल पर आधारित है। इसमें स्थितियों और समस्याओं को प्रस्तुत किया जाता है, उन पर चर्चा होती है और फिर उनका विश्लेषण किया जाता है। समस्याओं को सुलझाने पर महत्व दिया जाता है। प्रशिक्षक सहभागियों से प्रश्न पूछकर उन्हें खुले रूप से चर्चा करने तथा विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

विद्यालयों में अधिकतर प्रयोग किए जाने वाले शिक्षा के तरीके ऐसे होते हैं जिनका शिक्षक अधिकारपूर्वक प्रयोग लेक्चर के माध्यम से करके विद्यार्थियों को उन जानकारियों से अवगत कराते हैं, जिनके बारे में उन्हें ज्ञान होना चाहिए। परन्तु अनुभवात्मक सीख उपरोक्त तरीकों से भिन्न है।

इस सीख के अंतर्गत प्रशिक्षक सहभागियों के अनुभव और गतिविधियों, पुनर्विचार एवं चर्चा की प्रणालियों पर मार्गदर्शन करता है।

अनुभवात्मक सीख के अंतर्गत सहभागी निष्कर्षों पर पहुँचकर नई जानकारी या नये कौशल का भविष्य में आई समान परिस्थितियों में प्रयोग करना सीख जाते हैं।

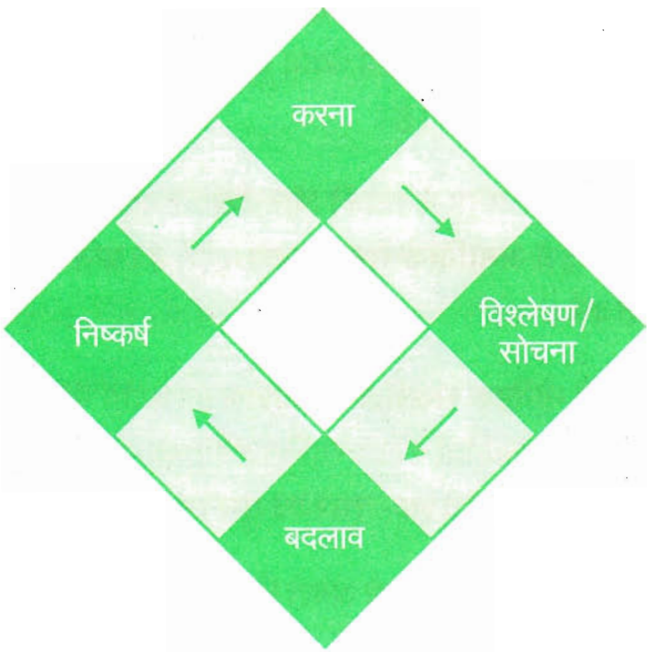

अनुभवात्मक सीख

- सहभागी किशोरियों को ऐसी गतिविधियों में सम्मिलित करती है जिससे वे अपने अनुभवों का पुनरावलोकन कर, उनका विश्लेषण कर सकती हैं।
- किशोरियों को अपने पुराने रूढ़िवादी व्यवहारों को बदल, नये प्रगतिशील व्यवहारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- सीखने की प्रणाली के अंतर्गत सहभागिता पर जोर देती है।
- प्रशिक्षक और सहभागियों के बीच बराबरी एवं आदर के संबंधों पर आधारित है।

उपयोग कैसे करें

जेण्डर संवेदनशीलता प्रशिक्षण हेतु निर्मित इस मार्गदर्शिका का उपयोग करते समय कुछ बातें ध्यान में रखनी होंगी -

- सबसे पहले आप मार्गदर्शिका के सभी सत्रों को **ध्यानपूर्वक पढ़ लें।** सभी सत्रों के बारे में विस्तार से जान लें।
- प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक सभी **प्रतिभागियों की सहभागिता** लें। उन्हें खुले रूप से चर्चा करने तथा विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रशिक्षण की अवधि में आप **प्रशिक्षक बनें, शिक्षक नहीं।** प्रशिक्षक एक आदर्श होता है जो प्रोत्साहन प्रदान करता है। प्रशिक्षक स्वयं भी प्रतिभागियों के साथ मिलकर भाग लेता है। वह इस बात का हमेशा ध्यान रखता है कि चर्चित विषयों पर प्रतिभागियों के विचार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।
- प्रशिक्षण के दौरान समूह में सबकी ओर देखकर बातें करें। सबका ध्यान अपनी ओर केन्द्रित करें। इसे **अमौखिक सरलीकरण** कहते हैं। प्रतिभागियों के उत्तर देने पर उन्हें प्रोत्साहित करें।
- इसके साथ ही **मौखिक सरलीकरण कौशल** का प्रयोग भी करें। स्वरचित प्रश्न पूछकर खुली चर्चा एवं सहभागिता को प्रोत्साहित करें। एक-दूसरे के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे वे एक-दूसरे को सुनने व आदर करने के आदी हो जाएँ।
- प्रशिक्षण के प्रथम दिन के बाद से अगले दिन की शुरुआत गत दिन की रिपोर्ट प्रस्तुति व चर्चा से करें।

जेण्डर प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

- अनुसूची -

सत्र क्र.	गतिविधि	सत्र की अवधि	पृष्ठ संख्या
1.	स्वयं का परिचय एवं अपेक्षाएँ	1 घण्टा 30 मिनट	2
2.	जेण्डर : अर्थ, समझ, अवधारणा	2 घण्टा 30 मिनट	6
3.	जेण्डर आधारित प्रचलित छवि	2 घण्टा 30 मिनट	11
4.	जेण्डर और समाज	2 घण्टा 30 मिनट	14
5.	जेण्डर भेदभाव एवं उसका प्रभाव	1 घण्टा 30 मिनट	17
6.	जेण्डर एवं स्वास्थ्य	1 घण्टा 30 मिनट	19
7.	विकास में जेण्डर की भूमिका	2 घण्टा	22
8.	जेण्डर आधारित योजना	1 घण्टा 30 मिनट	25

उद्देश्य इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी
1. परस्पर एक-दूसरे से परिचित हो सकेंगे।
2. एक-दूसरे के बारे में जान सकेंगे।
3. कार्यक्रम के उद्देश्य को समझकर कार्यक्रम से अपनी अपेक्षाएँ तय कर सकेंगे।

समय 1 घण्टा 30 मिनट

सत्र विभाजन
(अ) परिचय एवं अनुभवों का आदान-प्रदान : 1 घण्टा
(ब) कार्यक्रम के उद्देश्य एवं प्रतिभागियों की अपेक्षाएँ : 30 मिनट

सामग्री गेंद, पेपर शीट्स, मार्कर, पेन

हेण्ड आउट कार्यक्रम का उद्देश्य

(अ) परिचय :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों का स्वागत करें।
2. प्रतिभागियों को एक-दूसरे से परिचित कराने हेतु समूह कार्य - 1 कराएँ।

समूह कार्य - 1

प्रतिभागियों को गोल घेरे में खड़ा करें। खेल किसी भी प्रतिभागी से शुरू किया जा सकता है। एक प्रतिभागी किसी दूसरे प्रतिभागी के पास गेंद फेंकने से पहले अपना नाम बताएगा। जब तक सभी प्रतिभागी अपना नाम बताएँगे तब तक यह खेल चलता रहेगा। जब सभी प्रतिभागी अपना नाम बता दें, तब गेंद फेंकने का दूसरा राउंड शुरू होगा। इस दूसरे राउंड में प्रतिभागियों को गेंद फेंकने से पहले अपने नाम के साथ-साथ उस प्रतिभागी का नाम भी बताना होगा, जिसके पास वह गेंद फेंकने वाला है।

- 20 मिनट

3. प्रतिभागियों से यह जानने की कोशिश करें कि उन्हें यह कार्य कैसा लगा? यह कार्य एक-दूसरे का नाम जानने के लिए उपयोगी था या नहीं?
4. प्रतिभागियों को समझाएँ कि यह एक सहभागितापूर्ण कार्यक्रम है। अतः शुरू से ही प्रतिभागियों के बीच अच्छी जान-पहचान, मेलजोल व तालमेल होना जरूरी है।
5. प्रतिभागियों के बीच अब तक की जान-पहचान को बेहतर बनाने हेतु समूह कार्य-2 कराएँ।

समूह कार्य – 2

इस कार्य के अन्तर्गत प्रतिभागी 'उस साथी को पहचानें' नामक खेल खेलेंगे। प्रत्येक प्रतिभागी को हेण्ड आउट 1 B की एक प्रति दें। इस हेण्ड आउट में कुछ प्रश्नों की सूची दी गई है। प्रतिभागियों को एक-दूसरे के पास जाकर ऐसे व्यक्ति को पहचानना होगा जो कि उस प्रश्न का जवाब 'हाँ' में दे पाएँगे। प्रश्न का जवाब 'हाँ' में मिलने पर उस व्यक्ति का हस्ताक्षर प्रश्न में दिये गये स्थान पर लें। जवाब 'नहीं' में मिलने पर दूसरे प्रतिभागियों के पास जाएँ, जब तक कि प्रश्न का जवाब 'हाँ' में न मिल जाए। प्रतिभागी को कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा हस्ताक्षर पाने की कोशिश करना है।

– 15 मिनट

6. कार्य के बाद प्रतिभागियों को एकत्र करें तथा उन्हें निम्न बिन्दुओं के आधार पर चर्चा कराएँ।

चर्चा के बिन्दु :

- यह खेल कैसा लगा ? क्या इससे एक-दूसरे के बारे में अधिक जानने में मदद मिली ?
- कितने लोगों के पास सारे प्रश्नों के लिये हस्ताक्षर हैं ?
- कौन-कौन से प्रश्नों का जवाब 'हाँ' में पाना कठिन था, आपके विचार से इसका कारण क्या हो सकता है?
- कोई अन्य अनुभव

(ब) कार्यक्रम के उद्देश्य एवं प्रतिभागियों की अपेक्षाएँ :

कार्य के चरण :

1. प्रतिभागियों में हेण्ड आउट 1-A का वितरण करें तथा इन्हें कार्यक्रम के उद्देश्य से अवगत कराएँ।
2. प्रतिभागियों को इस कार्यक्रम से अपनी अपेक्षाएँ बताने को कहें। प्रतिभागियों को कागज तथा पेन दें, उन्हें अपनी अपेक्षाएँ लिखित में देने को कहें। किसी एक प्रतिभागी को अपेक्षाएँ पढ़कर सुनाने के लिए आमंत्रित करें। उपयुक्त अपेक्षाओं की सूची बनाएँ।
3. प्रतिभागियों को कार्यक्रम की रूपरेखा बताएँ तथा इसे प्रतिभागियों की अपेक्षाओं से मिलाकर देखें। यदि कुछ अपेक्षाएँ कार्यक्रम के उद्देश्य से बिल्कुल अलग हैं तो उस पर चर्चा कर ये बताएँ कि ये अपेक्षाएँ इस कार्यक्रम में पूरी नहीं हो सकतीं। अन्य अपेक्षाओं की पूर्ति कार्यक्रम में किस-किस स्थान पर है उसके विषय में बताएँ। जरूरत पड़ने पर कार्यक्रम में थोड़ा परिवर्तन कर महत्वपूर्ण विषयों का समावेश कर सकते हैं।

हेण्ड आउट : 1A

कार्यक्रम के उद्देश्य

1. जेण्डर संबंधी मुद्दों पर व्यक्तिगत, अन्तरवैयक्तिक, संस्थात्मक एवं सामुदायिक स्तर पर संवेदनशीलता बढ़ाना।

2. जेण्डर के दृष्टिकोण से परिस्थिति, संबंध एवं भूमिका की मूल अवधारणा की समझ को विकसित करना। जेण्डर से भूमिका, संबंध एवं परिस्थिति को विश्लेषित करने की क्षमता को विकसित करना।

3. किसी भी सामुदायिक स्तर की परियोजना की योजना, क्रियान्वयन, मूल्यांकन और मॉनीटरिंग को जेण्डर आधारित करने के लिए रणनीति बनाने की जानकारी देना।

हेण्ड आउट : 1B

	''उस साथी को पहचानें'.	हस्ताक्षर
1.	जिसका नाम 'क' अक्षर से शुरू हो	
2.	जिसका नाम 'स' अक्षर से शुरू हो	
3.	जो अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी हो	
4.	जो जल्दी से बड़ी हो जाना चाहती है	
5.	जिसे पढ़ाई करना अच्छा लगता है	
6.	जो कॉलेज में पढ़ी हो	
7.	जिसकी शादी 18 साल की उम्र के बाद हुई हो	
8.	जो दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहती हो	
9.	जो साइकिल चलाना जानती हो	
10.	जो स्वयं सहायता समूह की सदस्य हो	
11.	जिसका बैंक में खाता हो	
12.	जो कम्प्यूटर पर काम करना जानती हो	
13.	जिसने कभी स्वयंसेवक के रूप में कोई कार्य किया हो	
14.	जो घरेलू उद्योग धंधा करती हो	
15.	जो खेत में काम करती हो	
16.	जो भविष्य में कुछ बनना चाहती हो	
17.	जिसने अपने शहर के अतिरिक्त दूसरे किसी स्थान का भ्रमण किया हो	
18.	जिसको गाना आता हो	
19.	जिसे एड्स के बारे में जानकारी हो	
20.	जिसे दोस्ती करना अच्छा लगता हो	

उद्देश्य

इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी -

1. अपनी उस पहली याद को स्मरण कर आपस में बाँट सकेंगे जब उन्हें लड़का या लड़की होने का पहली बार अहसास हुआ था।
2. जेण्डर एवं लिंग के अन्तर को समझ सकेंगे।
3. जेण्डर की परिभाषा एवं उससे संबंधित महत्वपूर्ण तकनीकी शब्दावली को समझ सकेंगे।

समय

2 घण्टा 30 मिनट

सत्र विभाजन

(अ)	अपनी पहली याद आपस में बाँटना -	:	1 घण्टा
(ब)	लिंग एवं जेण्डर -	:	45 मिनिट
(स)	जेण्डर की परिभाषा एवं जेण्डर संबंधी महत्वपूर्ण तकनीकी शब्द -	:	45 मिनिट

सामग्री

फ्लिप चार्ट, पेपर शीट, पेन, मार्कर

हेण्ड आउट

2 A - जेण्डर की परिभाषा और जेण्डर संबंधी तकनीकी शब्दावली

(अ) पहली याद :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को चार छोटे समूहों में विभाजित करें। प्रतिभागी अपनी इच्छानुसार किसी भी महिलाओं या पुरुषों के ऐसे समूह का चयन कर सकते हैं जिनके बीच वे अपने व्यक्तिगत अनुभव बाँटने में सहजता महसूस करें।

2. प्रशिक्षक प्रतिभागियों को समझाएँ कि कार्यक्रम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे अपने अनुभवों को बताने के लिए कितने तैयार होते हैं, लेकिन किसी को भी इसके लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।

3. प्रतिभागियों को समूह कार्य - 1 से परिचित कराएँ, जो उन्हें अपने-अपने समूह में करना है।

समूह कार्य – 1

प्रतिभागी व्यक्तिगत रूप से उस समय के बारे में सोचें जब उन्हें पहली बार यह अहसास हुआ था कि लड़के व लड़कियों के साथ किए जाने वाले व्यवहारों में अन्तर है। एक-दूसरे के साथ कुछ क्षण इन यादों के बाँटें। समूह में हुई बातचीत को दर्शाने के लिए वे विविध विधा का इस्तेमाल कर सकते हैं, जैसे - चित्र बनाकर, रोल प्ले द्वारा, कविता, कहानी आदि के माध्यम से या अन्य किसी रचनात्मक तरीके से।

– 30 मिनट

4. प्रतिभागियों को पुनः बड़े समूह में एकत्रित करें। प्रत्येक छोटे समूह को अपना प्रस्तुतिकरण देने के लिए कहें। प्रस्तुतिकरण के लिए हर समूह को 5-7 मिनट का समय दें। जब सभी समूह प्रस्तुति दे चुके हों तो प्रस्तुतिकरण का विश्लेषण कीजिए। कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछिए -

चर्चा के बिन्दु :

- अपने अनुभवों पर बात करना आपको कैसा लगा ?
- अनुभवों को विविध माध्यमों से दर्शाने का आपका अनुभव कैसा था ?
- प्रस्तुतिकरण में समान रूप से क्या दर्शाया गया है ?
- इनमें स्त्री-पुरुष तथा किशोर-किशोरियों को कैसे प्रस्तुत किया गया है ?
- क्या परिवार में स्त्री और पुरुषों के साथ होने वाले व्यवहार में फर्क होता है ? और किन स्थितियों में ?
- किन स्थितियों में स्त्री-पुरुष के साथ समान व्यवहार होता है ?
- जन्म के समय हममें क्या भिन्नताएँ होती हैं तथा हम बाद में क्या सीखते हैं ?

(ब) जेण्डर एवं लिंग :

कार्य के चरण :

1. प्रतिभागियों को समूह कार्य 2 करने को कहें जिसके द्वारा जेण्डर एवं लिंग के बीच के अंतर को समझ सकेंगे।

प्रशिक्षक के लिए निर्देश : समूह कार्य से पहले स्वयं कुछ वाक्य/कथन तैयार रखें जो इस प्रकार हो सकते हैं :

- लड़कियाँ नाजुक होती हैं, लड़के कठोर होते हैं।
- लड़के कम रोते हैं।
- स्त्रियाँ स्तनपान कराती हैं।
- बड़े होने पर लड़कों की आवाज भारी हो जाती है।
- माँ, ममता की प्रतीक है।
- लड़कियाँ गुड़िया से खेलती हैं।
- स्त्रियों को माहवारी होती है।
- लड़कों को दाढ़ी-मूंछ होती है।

समूह कार्य – 2

प्रशिक्षक को सारे कथन/वाक्य एक के बाद एक पढ़कर सुनाना होंगे।

प्रति कथन पढ़ने के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि वह वाक्य जेण्डर या लिंग में से किससे संबंधित है ?

प्रतिभागी अपना अभिमत हाथ उठाकर बताएँ। उनके अभिमतों को गिनकर प्रशिक्षक फ्लिप चार्ट पर दर्ज करें। प्रशिक्षक नीचे दिए गए उदाहरण जैसा फ्लिप चार्ट पर लिख सकते हैं।

क्रमांक	कथन/वाक्य	जेण्डर	लिंग
1.	लड़कों को रोना शोभा नहीं देता	12	15
2.			
3.			

कौन सा अभिमत सही है और क्यों ? उस पर चर्चा करें।

– 20 मिनट

2. प्रतिभागियों से यह बताने को कहें कि इस प्रक्रिया के बाद जेण्डर व लिंग के संबंध में उनकी क्या समझ रही ? उत्तर कुछ इस तरह से मिलने चाहिए :-

   लिंग : शारीरिक, जन्म से, बदल नहीं सकते, सर्वव्यापक (Universal)

   जेण्डर : सामाजिक, लोगों द्वारा बनाए गए, ग्रहण किए गए, बदले जा सकते हैं, अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग होता है।

3. यदि प्रतिभागियों से सही उत्तर नहीं आते हैं तो प्रशिक्षक उत्तर देने में सहायता/मार्गदर्शन दें।

(स) जेण्डर की परिभाषा और तकनीकी शब्दावली :

1. हेण्ड आउट **'2A'** को वितरित करें और प्रतिभागियों को बताएँ कि हेण्ड आउट में जेण्डर की परिभाषा और जरूरी तकनीकी शब्द हैं, जिन्हें समझना जरूरी है।

2. प्रतिभागियों को हेण्ड आउट में दी गई परिभाषा और तकनीकी शब्दों को पढ़ने और समझने के लिए कुछ समय दीजिए।

3. प्रतिभागियों को चार समूहों में विभक्त करें।

4. प्रतिभागियों को बताएँ कि वे अपने-अपने समूहों में जेण्डर की परिभाषा और जेण्डर संबंधी शब्दों पर चर्चा करें तथा अपने अनुभवों के आधार पर हर शब्द से संबंधित दो-दो उदाहरण पेपर शीट पर लिखें।

5. 30 मिनट पश्चात् समूहों को पुनः एकत्र करें तथा समूहवार प्रस्तुतियाँ करवाएँ।

6. प्रतिभागियों का विश्लेषण करें तथा अपनी ओर से तथ्य स्पष्ट करें ताकि जेण्डर पर एक आम सोच बन सके।

हेण्ड आउट : 2A

जेण्डर की परिभाषा और जेण्डर संबंधी तकनीकी शब्दावली

1. **जेण्डर :** यह महिला व पुरुष की भूमिका व जिम्मेदारियों को संकेत/सूचित संदर्भित करता है जो सामाजिक तौर पर निश्चित की गई है। लिंग इस बात से संबंधित है कि व्यक्ति को किस रूप में समझा जाता है और उससे अपेक्षा की जाती है कि उसी तरह सोचे व काम करे जैसी प्रथाएँ समाज के द्वारा बनाई गई हैं। अपने शारीरिक अंतरों की वजह से नहीं। अलग-अलग समाज महिलाओं को अलग-अलग दर्जे व महत्व प्रदान करते हैं।

2. **यौन (Sex) :** शारीरिक आकार तथा कार्य (के जैव वैज्ञानिक गुणों) में अंतर यौन (काम) कहलाता है। उदाहरण नर व मादा के शारीरिक अंगों में अंतर और शरीर क्रिया विज्ञान में नर व मादा (अलग-अलग) हारमोन्स का पाया जाना।

3. **लैंगिक समानता (Gender Equality) :** किसी व्यक्ति के लिंग के आधार पर अवसरों का मुहैया संसाधनों एवं सेवाओं तक पहुँच में भेदभाव न करने की स्थिति जेण्डर समानता को दर्शाती है।

4. **लिंगों के प्रति दृष्टि (Gender Equity) :** यह महिलाओं और पुरुषों के बीच लाभों के बँटवारे में सुस्पष्टता और न्याय को बताता है। महिलाओं व पुरुषों की आवश्यकताएँ और ताकतें अलग-अलग होती हैं। ये अंतर लिंगों के बीच आए असंतुलन को ठीक करने के लिए पहचान व संबोधित किए जाने चाहिए।

5. **जेण्डर भेदभाव (Gender Discrimination) :** किसी व्यक्ति विशेष का यौन में अंतर होने का कारण उसके साथ पक्षपात (biased) तथा पूर्वाग्रहित (prejudicial) व्यवहार करना।

6. **जेण्डर संवेदनशील (Gender Sensitive) :** महिलाओं एवं पुरुषों की जरूरतों, इच्छाओं, भूमिकाओं, जिम्मेदारियों तथा समस्याओं में पाए जाने वाले अंतर को स्वीकार करना तथा इस विचार को कार्यक्रमों, परियोजनाओं और गतिविधियों में शामिल करना।

7. **जेण्डर अंधत्व (Gender Blindness) :** जब कोई व्यक्ति विशेष यह अहसास नहीं करता है कि यौन में अंतर होने के कारण महिला और पुरुषों की भूमिका और जिम्मेदारियाँ अलग-अलग होती हैं, वह जेण्डर के बारे में अंधा होता है।

उद्देश्य	इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी – 1. समाज में महिला–पुरुष की प्रचलित छवि को जेण्डर के संदर्भ में विश्लेषण कर व्यक्त कर सकेंगे। 2. समाज में महिला व पुरुषों की जेण्डर आधारित प्रचलित छवि को पहचान सकेंगे। 3. महिला व पुरुषों की प्रचलित छवि को बदलने में स्वयं की भूमिका का निर्धारण कर सकेंगे।
समय	2 घण्टा 30 मिनट
सामग्री	पेपर शीट, पेन, मार्कर, फ्लिप चार्ट
सत्र विभाजन	(अ) जेण्डर आधारित प्रचलित छवि : 1 घण्टा 30 मिनट (ब) जेण्डर आधारित भूमिका एवं कार्यों में परिवर्तन : 1 घण्टा

(अ) जेण्डर आधारित प्रचलित छवि :

कार्य के चरण

1. प्रतियोगियों को बताएँ कि सत्र का आरंभ समूह कार्य-1 से करेंगे तथा उन्हें समूह कार्य-1 से परिचित कराएँ।

समूह कार्य – 1

प्रतिभागियों को गोल घेरे में खड़ा करें। उन्हें बताएँ कि 'महिला' शब्द कहने पर सभी को महिला संबंधी किसी विशेषता को दर्शाते हुए उन्हें कोई पोज बनाना है। इसके लिए उन्हें दो मिनट का समय दें। एक-एक करके प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा लिए गए 'पोज' में महिला की प्रचलित छवि के बारे में अन्य प्रतिभागियों की राय लें। इसी प्रकार पुरुष शब्द कहने पर पुरुषों की प्रचलित छवि को सभी को पुरुष की विशेषता दर्शाने वाला कोई पोज बनाना है। इस गतिविधि के लिए भी दो मिनट का समय दें तथा पूरी प्रक्रिया को पुरुषों की प्रचलित छवि को विश्लेषित करते हुए दोहराएँ।

– 30 मिनट

2. गतिविधि के बाद निम्न बिन्दुओं के आधार पर चर्चा करें।

चर्चा के बिन्दु :

- यह गतिविधि आपको कैसी लगी?
- दर्शायी गई प्रचलित छवियों में महिला की भूमिका किस प्रकार थी व पुरुष की भूमिका किस प्रकार की थी ?
- आमतौर पर समाज में क्या महिला व पुरुष की इसी प्रकार की भूमिकाएँ नज़र आती हैं।

3. गतिविधि के अगले चरण में प्रतिभागियों को चित्र-1 दिखाएँ व निम्न बिंदुओं के आधार पर चित्र का विश्लेषण करें -

चर्चा के बिन्दु :

- चित्र में आप क्या-क्या देख रहे हैं ?
- पुरुष को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है ?
- चित्र में पुरुष की किन विशेषताओं को दर्शाया गया है ?
- महिला को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है ?
- महिला की किन विशेषताओं को दर्शाया गया है ?
- महिला-पुरुष का आपसी संबंध किस प्रकार का नजर आ रहा है ?
- चित्र के आधार पर आज समाज में महिला व पुरुषों की स्थिति के बारे में क्या सोचते हैं ?
- क्या यह छवि समाज में महिला-पुरुष की प्रचलित छवि के अनुरूप है ?
- क्या आप महिला व पुरुष की इस छवि से सहमत हैं ?

(ब) जेण्डर आधारित भूमिका एवं कार्यों में परिवर्तन :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को 3-4 समूहों में विभक्त करें। समूह कार्य-2 को स्पष्ट कराएँ जो उन्हें अपने समूह में करना होगा।

समूह कार्य - 2

आप समाज में महिला व पुरुष की किस प्रकार की छवि देखना चाहेंगे ? अपनी परिकल्पना को चित्र के माध्यम से दर्शाएँ। चित्र तैयार होने पर प्रतिभागियों को एकत्रित कर उन्हें अपने चित्र के बारे में सभी को बताने के लिये कहें।

- 20 मिनट

2. प्रस्तुतिकरण के पश्चात निम्न बिन्दुओं के आधार पर चर्चा करें -

- समूह द्वारा प्रस्तुत चित्रों के माध्यम से दर्शायी गई महिला/पुरुष की छवि पूर्व में प्रदर्शित पोस्टर से कितनी भिन्न है ?
- इनमें क्या समानता है ?
- क्या महिला/पुरुष की प्रचलित छवि को बदलना उपयुक्त है ?
- क्या ऐसा करना संभव है ?
- यदि बदला जा सकता है तो इस परिवर्तन को लाने के लिए आप क्या करेंगे ?

चित्र– 1

चित्रांकन–दीपक मालवीय

उद्देश्य	इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी - 1. समाज के अलग-अलग वर्गों में महिला-पुरुष के दायित्वों का विश्लेषण कर पाएँगे। 2. समाज की कुछ ऐसी संस्थाओं तथा प्रथाओं की पहचान कर पाएँगे जो समाज में जेण्डर आधारित प्रचलित व्यवहार/कार्यों को प्रभावित करती हैं, बढ़ावा देती हैं और उन्हें बनाए रखने में सहायता करती हैं।
समय	2 घण्टा 30 मिनट
सत्र विभाजन	(अ) 24 घण्टे की गतिविधियाँ : 1 घण्टा (ब) जेण्डर आधारित प्रचलित व्यवहार और कार्यों पर संस्थाओं और प्रथाओं का प्रभाव। : 1 घण्टा (स) विश्लेषण। : 30 मिनट
सामग्री	पेपर शीट, मार्कर, सेलो टेप, स्केच पेन।

(अ) 24 घण्टे की गतिविधियाँ :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को चार समूहों में विभक्त करें तथा बताएँ कि उन्हें अपने-अपने समूह में समूह कार्य-1 करना है।

समूह कार्य – 1

अपने अनुभव के आधार पर प्रत्येक समूह समाज के अलग-अलग वर्गों में महिला-पुरुषों के प्रचलित कार्यों की सूची बनाएँगे, जैसे -

समूह क्रमांक 1 : स्वयं के परिवार में।

समूह क्रमांक 2 : किसान-मजदूर के परिवार में।

समूह क्रमांक 3 : नौकरीपेशा मध्यमवर्गीय परिवार में।

समूह क्रमांक 4 : उच्च आय वर्गीय परिवार में।

प्रत्येक प्रतिभागी अपने समूह को दिए गए समाज के वर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करें तथा प्रस्तुति हेतु निम्न बिन्दुओं को पृथक-पृथक पेपर शीट पर उतारकर उन बिन्दुओं के संदर्भ में कार्यों की सूची बनाएँ।

- पुरुष के प्रचलित कार्य।
- महिला के प्रचलित कार्य।
- महिला-पुरुष में आपस में हस्तान्तरित होने वाले कार्य

– 30 मिनट

2. 30 मिनट पश्चात् समूहों को पुनः इकट्ठा करें तथा समूहवार (5 मिनट प्रत्येक) प्रस्तुतियाँ करवाएँ। साथ ही साथ प्रशिक्षक विभिन्न समूहों द्वारा निकाले गए महिला-पुरुषों के दायित्वों को अलग-अलग जोड़कर एक सामान्य सूची बनाएँ। प्रस्तुतियों के पश्चात समूह की पेपर शीट्स को दीवार पर टेप की सहायता से लगवाएँ।

3. प्रशिक्षक महिला-पुरुष के कार्यों की इस सूची के आधार पर निम्न बिन्दुओं पर चर्चा कराएँ :-

- क्या महिला-पुरुष के निर्धारित कार्य आपस में हस्तान्तरित हो सकते हैं ?
- महिला-पुरुष के प्रचलित कार्यों में किस के कार्य महत्वपूर्ण हैं ? क्या उन्हें प्रथम, द्वितीय क्रम दिया जाना चाहिए ?
- समाज में महिला-पुरुष के निर्धारित कार्यों का आधार क्या है ?

(ब) जेण्डर आधारित प्रचलित व्यवहार और कार्यों पर विभिन्न संस्थाओं और प्रथाओं का प्रभाव :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को कुछ संस्थाओं और प्रथाओं को चिन्हित करने को कहें जो समाज में महिला-पुरुष के प्रचलित व्यवहार तथा कार्यों को प्रभावित करते हों तथा बढ़ावा देते हों।

   सही उत्तर : परिवार, समाज, धर्म, कानून, शिक्षा, दृश्य-श्रृव्य माध्यम, संस्कृति, परम्परा, लोकप्रिय कथाएँ, गीत, कहावत इत्यादि।

2. प्रतिभागियों को 4-5 समूहों में विभक्त करें तथा उन्हें समूह कार्य-2 करने हेतु निर्देश दें। प्रत्येक समूह में पेपर शीट एवं पेन वितरित करें।

समूह कार्य – 2

प्रतिभागियों को बताएँ कि उन्हें अपने-अपने समूह में उक्त विषयों में से किन्हीं भी 2-3 विषयों पर निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर चर्चा करना है। प्रतिभागी ध्यान रखें कि प्रत्येक समूह को चर्चा हेतु अलग-अलग विषय चुनना है।

- उदाहरण सहित बताएँ कि आपके समूह के लिए निर्दिष्ट संस्था व प्रथाएँ महिला-पुरुष के प्रचलित व्यवहार/कार्यों को कैसे प्रभावित करती हैं तथा बढ़ावा देती हैं ?
- क्या इन संस्थाओं व प्रथाओं में कोई बदलाव आया है जो कि एक जेण्डर निष्पक्ष समाज की ओर उन्नति को प्रतिबिंबित करता है।

30 मिनट पश्चात समूह को पुनः इकट्ठा करें तथा समूहवार प्रस्तुतियाँ करवाएँ। प्रस्तुतियों के पश्चात प्रत्येक समूह की पेपर शीट्स को दीवार पर टेप की सहायता से लगवाएँ।

– 30 मिनट

(स) विश्लेषण

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों द्वारा पूर्व गतिविधि में पेपर शीट्स पर लिखे तथ्यों के आधार पर निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करवाएँ -

- महिला और पुरुषों से संबंधी कौन-कौन से संदेश, नैतिक मूल्य तथा मान्यताओं के बारे में आप गर्व अनुभव करते हैं जो आपका सम्मान व महत्व बढ़ाते हों।
- महिला और पुरुषों से संबंधी कौन-कौन से संदेश, नैतिक मूल्य तथा मान्यताएँ आप नापसंद करते हैं जो आपको तुच्छ/निरर्थक बताता हो।
- इनमें से किन संदेशों, नैतिक मूल्यों तथा मान्यताओं को बदलना चाहेंगे ?
- महिला-पुरुष के प्रचलित व्यवहारों में आप अपने स्तर पर क्या बदलाव ला सकते हैं ?

प्रशिक्षक के लिए निर्देश :

प्रतिभागियों को यह बताना तथा समझाना जरूरी है कि सदियों से प्रचलित जेण्डर आधारित व्यवहार व कार्यों को चुनौती देना तथा उनमें बदलाव लाना एक कठिन काम है। इसके लिए पहले व्यक्ति को अपनी कुछ व्यक्तिगत मान्यताओं को भी बदलना होगा जो और भी ज़्यादा मुश्किल काम है।

उद्देश्य	इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी – 1. जेण्डर भेदभाव को समझकर उसे व्यक्त कर सकेंगे। 2. परिवार, समाज तथा कार्यस्थल के संदर्भ में जेण्डर भेदभाव को समझकर व्यक्त कर सकेंगे। 3. अपने कार्यों एवं भूमिका में व्यवहारगत परिवर्तन को परिलक्षित कर सकेंगे।
समय	1 घण्टा 30 मिनट
सत्र विभाजन	(अ) जेण्डर भेदभाव : 45 मिनट (ब) भूमिका एवं कार्यों में व्यवहारगत परिवर्तन : 45 मिनट
सामग्री	पेपर शीट, कार्ड्स, स्केच पेन, मार्कर, कैंची, गोंद।

(अ) जेण्डर भेदभाव :

कार्य के चरण

1. प्रशिक्षक प्रतिभागियों को बतलाएँ कि उन्हें समूह में कार्य करना है तथा उन्हें तीन समूहों में विभक्त करें। प्रत्येक समूह में पेपर शीट, मार्कर वितरित करें।
2. प्रत्येक समूह को परिवार, समाज तथा कार्यस्थल इन तीनों विषयों में से एक-एक विषय के संदर्भ में कार्य करने हेतु निर्देशित करें।
3. अपने-अपने समूह में प्रतिभागियों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करने को कहें :-
   - अपने अनुभवों पर आधारित ऐसी सूची बनाएँ जिसमें आप दिए गए विषय के संदर्भ में जेण्डर भेदभाव को दर्शा सकें।
   - बनाईगई सूची के आधार पर जेण्डर भेदभाव के कारणों को चिन्हित कर पेपर शीट पर लिखें।
4. 30 मिनट पश्चात समूहों को पुनः एकत्रित करें तथा समूहवार प्रस्तुतियाँ कराएँ। तीनों समूहों की प्रस्तुतियों को दीवार पर लगाएँ –
5. अपनी ओर से मुद्दों को जोड़ें एवं घटाएँ।

(ब) भूमिका एवं कार्यों में व्यवहारगत परिवर्तन :

प्रशिक्षक के लिए निर्देश :

- इस सत्र का उद्देश्य है कि, प्रतिभागी अपने क्षेत्रीय कार्यों में लक्ष्य की अधिकतम प्राप्ति हेतु महिला-पुरुष को समान अवसर उपलब्ध कराने के संदर्भ में जेण्डर भेदभाव के फलस्वरूप उत्पन्न हो रहे अवरोधों को समझ सकें। साथ ही इन अवरोधों को समाप्त करने हेतु प्रयास कर सकें।

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को पाँच समूहों में विभक्त करें। प्रत्येक समूह में पेपर शीट्स, मार्कर तथा पाँच कार्ड्स में से एक वितरित करें। ये कार्ड्स प्रशिक्षक को स्वयं तैयार करने हैं। इन कार्ड्स पर दर्शाए गए अवरोध प्रतिभागियों के कार्य से जुड़े होने चाहिए। उदाहरणस्वरूप -

    - घर में छोटे भाई-बहनों की देखभाल करना या स्कूल दूर होने के कारण लड़कियों की पढ़ाई बन्द करना।
    - नवयुवती के लिए व्यावसायिक तकनीकी प्रशिक्षण जैसे मैकेनिक, इलेक्ट्रिक, रिपेयरिंग आदि के अवसर उपलब्ध न होना।

2. प्रतिभागियों को अपने-अपने समूह में समूह कार्य-1 करना है जिसमें वे सामाजिक-आर्थिक विकास के कामों में जेण्डर भेदभाव से जुड़े अवरोधों पर चर्चा करेंगे। इस संदर्भ में वे अपनी भूमिकाओं को पुनरीक्षित करेंगे।

समूह कार्य – 1

आपको दिए गए कार्ड पर अवरोध लिखे हैं, इस पर चर्चा करें। प्रत्येक अवरोध को दूर करने के उपाय चर्चा द्वारा तय करें तथा संबंधित कार्ड के पृष्ठ भाग पर लिखें।

लिखे गए उपायों के आधार पर आप अपनी भूमिका तथा कार्यों में क्या-क्या सकारात्मक परिवर्तन करेंगे, चर्चा कर प्रस्तुति हेतु पेपर शीट पर लिखें।

30 मिनट पश्चात समूहों को पुनः इकट्ठा करें तथा समूह कार्य की समूहवार प्रस्तुतियाँ करवाएँ (5 मिनट प्रत्येक समूह)

– 20 मिनट

3. प्रशिक्षक समूहों की प्रस्तुतियों का विश्लेषण करें। अपनी ओर से मुद्दों को जोड़ें तथा घटाएँ।

    - प्रतिभागियों की भूमिका को केन्द्र में रखकर संभावित अवरोधों एवं उन्हें दूर करने के उपायों पर विस्तार से चर्चा करें। प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित कर उनकी सहभागिता अर्जित करने का प्रयास करें।

उद्‌देश्य	इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी – 1. व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु जेण्डर समझ की आवश्यकता को पहचान सकेंगे। 2. स्वास्थ्य के संदर्भ में ''जीवन चक्र उपागम'' को समझ सकेंगे। 3. जेण्डर भेदभाव से व्यक्ति के स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव को समझ सकेंगे।
समय	1 घण्टा 30 मिनट
सत्र विभाजन	(अ) जीवन चक्र उपागम : 45 मिनट (ब) स्वास्थ्य पर जेण्डर भेदभाव का प्रभाव : 45 मिनट
सामग्री	पेपर शीट्स, मार्कर, फ्लिप चार्ट
हेण्ड आउट	6 A - जीवन चक्र उपागम

(अ) जीवन चक्र उपागम :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों का स्वागत करें तथा उन्हें बताएँ कि इस सत्र में वे जेण्डर एवं स्वास्थ्य के बारे में अधिक जान पाएँगे।
2. निम्न बिन्दुओं के आधार पर प्रतिभागियों को अनुभव के आदान-प्रदान हेतु प्रोत्साहित करें -

चर्चा के बिन्दु

- व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिये क्या-क्या आवश्यकताएँ होती हैं ?
- क्या इन आवश्यकताओं की पूर्ति में परिवार में जेण्डर आधारित असमानता होती है ?
- महिला और पुरुष किस तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करते हैं ?
- इन समस्याओं के निदान हेतु आवश्यकताओं की पूर्ति में क्या कोई भेदभाव किया जाता है ?

3. प्रशिक्षक प्रतिभागियों को बताएँ कि जीवन की हर अवस्था की आवश्यकताओं का प्रभाव भविष्य में बेहतर स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण होता है। इस बात को हेण्ड आउट 6A में दर्शाए गए **''जीवन चक्र उपागम''** के आधार पर समझाएँ।
4. प्रशिक्षक फ्लिप चार्ट पर एक बड़े आकार का जीवन चक्र उपागम का डायग्राम हेण्ड आउट के अनुसार बनाएँ। प्रतिभागियों को समझाने में इस फ्लिप चार्ट का उपयोग करें। चर्चा के बाद हेण्ड आउट की प्रति प्रतिभागियों को वितरित करें।

(ब) स्वास्थ्य पर जेण्डर भेदभाव का प्रभाव :

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों से पूछें कि क्या समाज में प्रचलित जेण्डर भेदभाव का स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव पड़ता है ?
2. प्रतिभागियों से इन प्रभावों की पहचान कराने हेतु समूह कार्य-1 कराएँ।

समूह कार्य – 1

प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभक्त करें। प्रत्येक समूह को निम्नलिखित में से जेण्डर आधारित एक कारण दें। वे अपने समूह में उस कारण से व्यक्ति के जीवन में पड़ने वाले प्रभावों पर विस्तार से चर्चा करेंगे तथा प्रस्तुतिकरण हेतु उन प्रभावों की सूची बनाएँगे। 20 मिनट बाद प्रतिभागियों को पुनः इकट्ठा करें तथा समूहवार प्रस्तुति कराएँ।

समूह – 1 : कम आहार लेना तथा आहार के पोषण तत्व पर ध्यान न देना।

समूह – 2 : स्कूल न जाना या उच्च शिक्षा न देना।

समूह – 3 : कम उम्र में विवाह।

– 20 मिनट

3. समूहवार प्रस्तुतिकरण के दौरान प्रशिक्षक फ्लिप चार्ट पर सभी कारणों के प्रभावों की सूची बनाएँ। निम्न बिन्दुओं के आधार पर चर्चा करें –
   - दिए गए जेण्डर आधारित कारणों की घटनाएँ क्या आपके व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी हैं ?
   - आपके जीवन में इन कारणों से होने वाले प्रभाव और समूह में चर्चित प्रभाव में कोई समानता है ?
   - जेण्डर भेदभाव से स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभावों के बारे में आपने पहले कभी सोचा था या महसूस किया था ?
   - इन विपरीत प्रभावों के निदान के लिए आप क्या बदलाव लाना चाहेंगे ?

हेण्ड आउट : 6A

जीवन चक्र उपागम

व्यक्ति की स्वास्थ्य आवश्यकताएँ अलग-अलग प्रदेश, उम्र व वर्ग में स्वाभाविक रूप से भिन्न-भिन्न होती हैं। जीवन की हर अवस्था में व्यक्ति की स्वास्थ्य आवश्यकताएँ बदलती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करती है। इसलिये स्वास्थ्य सुधारने के लिये व्यक्ति के समस्त जीवन चक्र में स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता होती है। जीवन चक्र उपागम जीवन की विभिन्न अवस्थाओं तथा प्रत्येक अवस्था में आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल के बारे में बताता है।

जीवन चक्र उपागम

गर्भधारण

- ✯ मादा भ्रूण को जन्म के पूर्व अथवा जन्म के समय मादा बच्चे की हत्या कर देना अथवा भेदभाव न करना।
- ✯ सुरक्षित प्रसव व बच्चे की उत्तर जीविता के लिए उचित वातावरण।

बचपन

- ✯ मादा भ्रूण हत्या न किया जाना
- ✯ सम्पूर्ण स्तनपान
- ✯ उचित समय पर ऊपरी आहार देना
- ✯ उचित भोजन व पोषण
- ✯ बचपन की बीमारियों से बचाव व जल्दी इलाज
- ✯ लड़कों व लड़कियों को शिक्षा व अवसरों की समानता प्रदान करना

किशोरावस्था

- ✯ पोषण
- ✯ बुरे व्यवहार से बचाया जाना, उदाहरण के लिए बलात्कार, हिंसा व शराब पीना
- ✯ सही उम्र में विवाह
- ✯ शिक्षा व जीवन कौशल
- ✯ कौशलों का विकास
- ✯ स्वाभिमान व आत्म-उत्साह
- ✯ सभी प्रकार की हिंसा से बचाव

प्रजनन अवस्था

- ✯ सुरक्षित गर्भावस्था और आवश्यक चिकित्सकीय निगरानी में प्रसव
- ✯ प्रजनन तंत्र के संक्रमणों आर.टी.आई./यौन संचारित रोग/एच.आई.वी./एड्स से बचाव
- ✯ सुरक्षित गर्भनिरोधक द्वारा गर्भधारण की संख्या सीमित व उनके बीच अंतर रखना
- ✯ प्रभावी व स्वास्थ्य सेवाओं द्वारा स्वास्थ्य की अन्य आवश्यकताओं की देखभाल
- ✯ महिलाओं में अनुर्वरता की रोकथाम व प्रबंध
- ✯ गर्भपात सेवाओं की उचित व्यवस्था
- ✯ गर्भधारण के कारण माँ व बच्चे की होने वाली मृत्यु, विकलांगता की रोकथाम

वृद्धावस्था

- ✯ रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज) समस्याओं से निपटना
- ✯ स्तन कैंसर तथा गर्भाशय कैंसर की प्रारंभ में ही पहचान
- ✯ वृद्धावस्था की बीमारियाँ, कमजोर दृष्टि, गतिशीलता तथा अस्थिकोमलता की देखभाल करना

VHAI के प्रकाशन 'प्रजनन स्वास्थ्य एवं प्रजनन अधिकार' से साभार

उद्देश्य	इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी – 1. विकास में जेण्डर असंवेदनशीलता के प्रभावों को समझकर व्यक्त कर सकेंगे। 2. विकास में जेण्डर संवेदनशीलता की आवश्यकता समझकर व्यक्त कर सकेंगे।
समय	2 घण्टा
सत्र विभाजन	(अ) विकास कार्यक्रमों को जेण्डर संवेदनशील होने की आवश्यकता : 1 घण्टा (ब) विकास में जेण्डर असंवेदनशीलता के प्रभाव : 1 घण्टा
सामग्री	पेपर शीट्स, मार्कर।
हेण्ड आउट	7 A केस स्टडी

(अ) विकास कार्यक्रमों को जेण्डर संवेदनशील होने की आवश्यकता

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को 3 समूहों में विभक्त करें तथा समूह कार्य-1 से परिचित कराएँ जो उन्हें अपने समूह में करना होगा।

समूह कार्य – 1

प्रतिभागियों को हेण्ड आउट 7A- में दी गई केस स्टडी का विस्तृत वर्णन करें तथा प्रत्येक समूह को केवल केस स्टडी की एक प्रति दें। अपने समूह में केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा कर प्रस्तुतिकरण हेतु पेपर शीट में लिखने को कहें।

- आप क्या सोचते हैं कि इस घटना में क्या हुआ होगा ?
- आपके विचार से ऐसा क्यों हुआ ?

30 मिनट पश्चात प्रतिभागियों को पुनः इकट्ठा करें तथा समूहवार प्रस्तुति करवाएँ। प्रत्येक समूह के जवाबों को फ्लिप चार्ट पर नोट करते जाएँ। प्रस्तुतिकरण के पश्चात प्रतिभागियों को बताएँ कि वास्तव में इस घटना में क्या हुआ था और क्यों हुआ था ? (हेण्ड आउट 7A के अनुसार)

– 30 मिनट

2. प्रतिभागियों से पूछें कि वे इस घटना को अपने अनुभव से जोड़कर किस प्रकार देखते हैं ?

प्रशिक्षक के लिए निर्देश :

प्रतिभागियों को यह समझाना जरूरी है कि किसी भी विकास परियोजना की सफलता के लिए उसकी रूपरेखा बनाने और संचालन करते समय उस स्थान का महिला और पुरुषों की जेण्डर आधारित भूमिका को समझना अनिवार्य है। महिला एवं पुरुषों पर विकास परियोजना द्वारा होने वाले प्रभावों को शुरू से विश्लेषण कर निर्धारित करना जरूरी है। विकास की प्रक्रिया **'जेण्डर एवं विकास'** कहलाता है। (प्रतिभागी इस विषय को अगले सत्र में विस्तार से समझ पाएँगे।)

(ब) विकास में जेण्डर असंवेदनशीलता के प्रभाव

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को चार समूहों में विभक्त करें तथा प्रत्येक समूह में पेपर शीट, मार्कर वितरित करें।
2. प्रतिभागी अपने-अपने समूह में विकास में जेण्डर असंवेदनशीलता के प्रभावों पर निम्न बिन्दुओं के संदर्भ में चर्चा कर प्रस्तुति हेतु शीट पर बिन्दुवार लिखें -
   - व्यक्तित्व एवं पारिवारिक विकास
   - सामाजिक विकास
   - आर्थिक विकास
3. 30 मिनट पश्चात समूहों को पुनः इकट्ठा करें तथा समूहवार प्रस्तुतियाँ करवाएँ।
4. प्रशिक्षक प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों का विश्लेषण करें।
5. विकास के परिप्रेक्ष्य में समान अवसर तथा संसाधनों तक पहुंच के संदर्भ में, जेण्डर संवेदनशीलता की आवश्यकता पर चर्चा करें।

हेण्ड आउट : 7 A

केस स्टडी

यह केस स्टडी म.प्र. के एक छोटे से गाँव में हुई एक सत्य घटना पर आधारित है। यह घटना एक विकास परियोजना के बारे में है जो कि इस गाँव में क्रियान्वित की गई थी। इस परियोजना का उद्देश्य गाँव वालों के स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति को विकसित करना था। इस परियोजना के अन्तर्गत गाँववालों को गाय-भैंस पालन करने में सहायता दी गई थी। इस परियोजना से यह उम्मीद थी कि दूध के पर्याप्त उत्पादन से गाँव के बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा एवं दूध की बिक्री से गाँव की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा तथा बच्चे स्कूल जाने लगेंगे।

परियोजना के प्रारंभ होने के एक साल बाद किए गए मूल्यांकन से पता चलता है कि बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य में पतन हुआ है और पहले से कम लड़कियाँ स्कूल जाती हैं।

चर्चा के लिए प्रश्न :

क्या हुआ ?

इस समुदाय में गाय-भैंसों से संबंधित कार्य महिलाएँ करती थीं। इस परियोजना ने महिलाओं के काम का बोझ और बढ़ा दिया। यद्यपि गाय-भैंस का काम महिलाएँ करती थीं, दूध बेचने का काम पुरुष करते थे तथा दूध से हुई आमदनी पर उनका अधिकार/नियंत्रण रहता था। वे दूध से होने वाली अच्छी आमदनी को देखकर ज्यादा से ज्यादा दूध बेचने लग गए। बच्चों को दूध देना बंद कर दिया गया, जिसकी वजह से उनके स्वास्थ्य का पतन होने लगा। दूध की बिक्री से हुई कमाई से गाँव के पुरुष अपने लड़कों को अच्छे स्कूल में भेजने/पढ़ाने लगे और महिलाओं के बढ़ते काम में हाथ बँटाने के लिए लड़कियाँ पढ़ाई छोड़कर घर पर रहने लगीं।

ऐसा क्यों हुआ ?

परियोजना बनाते समय उस समुदाय के महिला-पुरुषों की भूमिका तथा दायित्वों की समझ को ध्यान में नहीं रखा गया था। कुछ जरूरी तथ्यों पर विचार नहीं किया गया था। जैसे कि कौन से संसाधन के साथ, कौन क्या करता है, संसाधन, लाभ/अनुदानी और सुअवसर/मौके पर किसकी पहुँच और नियंत्रण है।

इन कारणों से परियोजना का परिणाम इसके उद्देश्य और अपेक्षाओं के विपरीत पाए गए, इसलिए किसी भी विकास कार्य/परियोजना को जेण्डर संवेदनशील होना जरूरी है।

उद्देश्य

इस सत्र के अन्त तक प्रतिभागी –

1. जेण्डर विश्लेषण मेट्रिक्स से परिचित हो पाएँगे।
2. विकास कार्यक्रम/परियोजना का विश्लेषण जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स के आधार पर कर सकेंगे।
3. विकास कार्यक्रम आवश्यक परिवर्तन के प्रति सोच विकसित कर सकेंगे।

समय 1 घण्टा 30 मिनट

सत्र विभाजन

(अ) जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स	30 मिनिट
(ब) विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण	1 घण्टा

सामग्री पेपर शीट्स, मार्कर, केस स्टडी।

लिखित सामग्री

8 A – जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स

8 B – जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स की शब्दावली

8 C – केस स्टडी

8 D – एनालिसिस मेट्रिक्स के माध्यम से परियोजना का विश्लेषण

(अ) जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स :

कार्य के चरण

1. जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स से प्रतिभागियों को परिचित कराएँ। यह भी बताएँ कि इस मेट्रिक्स के प्रयोग से किसी भी कार्यक्रम/परियोजना के प्रभावों का विश्लेषण किया जा सकता है।

प्रशिक्षक के लिए निर्देश :

1990 के दशक के शुरुआती दौर में जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स बनाया गया था। सामुदायिक स्तर के विकास कार्यकर्ताओं की मांग थी कि एक ऐसा जेण्डर विश्लेषण उपकरण बनाया जाए, जिसके द्वारा बड़े पैमाने के विस्तृत शोध तथा आंकड़ा संग्रह (Data collection) के बिना किसी भी परियोजना के प्रभाव को नापा जा सके। इसी मांग के परिणामस्वरूप जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स बनाया गया।

इस मेट्रिक्स के अन्तर्गत किसी भी विकास परियोजना से होने वाले प्रभाव को चार स्तरों- महिला, पुरुष, परिवार व समुदाय तथा चार श्रेणियों - श्रम, समय, संसाधन व सामाजिक-सांस्कृतिक तत्व में विश्लेषित किया जा सकता है।

इस मेट्रिक्स को समुदाय के महिला एवं पुरुषों द्वारा भरा जाना चाहिए। इसे केवल एक बार नहीं, परन्तु परियोजना की अवधि के दौरान नियमित रूप से भरना चाहिए। जब हेण्ड आउट 8A में मेट्रिक्स के सभी खण्ड भर जाएँ तब प्रत्येक तत्वों को पुनर्अवलोकन कर उन्हें निम्न चिन्हों में से उपर्युक्त चिन्ह से चिन्हित करें :-

(+) यदि यह परियोजना के उद्देश्य के अनुकूल हों या उनसे मेल खाते हों।

(-) यदि यह परियोजना के उद्देश्यों के विपरीत है।

(?) यदि यह अनिश्चित है।

2. प्रतिभागियों को हेण्ड आउट **8A** एवं **8B** दें तथा उन्हें हेण्ड आउट्स को ध्यानपूर्वक पढ़ने और समझने के लिए कहें।

3. प्रशिक्षक जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स को समझने में प्रतिभागियों की मदद करें।

(ब) विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण

कार्य के चरण

1. प्रतिभागियों को बताएँ कि वे एक केस स्टडी का इस्तेमाल कर जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स के माध्यम से केस स्टडी में दी गई विकास परियोजना का विश्लेषण करेंगे।

2. प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभक्त करें तथा उन्हें हेण्ड आउट **8C**- केस स्टडी वितरण करें। अपने-अपने समूह में स्टडी अध्ययन कर उसका विश्लेषण हेण्ड आउट **8A** में दिए गए जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स के फार्मेट में करें।

3. 30 मिनट पश्चात प्रतिभागियों को पुनः इकट्ठा कर समूहवार रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहें।

4. समूह प्रस्तुतिकरण के पश्चात निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें :-

   - क्या यह विश्लेषण करना कठिन/सरल था ?
   - विश्लेषण करते समय हमें सामाजिक परिवेश जेण्डर संबंधी किन बातों का ध्यान रखना होता है ? (उदाहरणस्वरूप संसाधन तक पहुँच किसकी है ? संसाधनों/अवसरों और लाभों पर नियंत्रण किसका है ? संसाधन का उपयोग कौन किस प्रकार करता है ?)
   - तीनों समूहों में क्या बातें समान रूप से निकलकर आईं ?
   - क्या भिन्नताएँ थीं ?
   - समाज के विभिन्न वर्गों पर कार्यक्रम के प्रभाव सकारात्मक/नकारात्मक थे ?
   - क्या परिवर्तन कर आप कार्यक्रम को प्रभावशाली बना सकते हैं ?

हेण्ड आउट : 8 A

जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स

	श्रम	समय	संसाधन	सांस्कृतिक-सामाजिक
महिला				
पुरुष				
परिवार				
समुदाय				

हेण्ड आउट : 8 B

जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स की शब्दावली

विश्लेषण के चार स्तर –

1. **महिलाएँ** – यदि लक्ष्य समूह महिला है तो हर आयु की महिला जो कि लक्ष्य समूह में आती हैं वरना समुदाय की सभी महिलाएँ।
2. **पुरुष** – यदि लक्ष्य समूह पुरुष है तो हर आयु के पुरुष जो कि लक्ष्य समूह में आते हैं - वरना समुदाय के सभी पुरुष।
3. **परिवार** – सभी पुरुष, महिला और बच्चे जो एक साथ रहते हैं। तब भी जब वे एक एकल परिवार के सदस्य/हिस्सा नहीं हैं ।
4. **समुदाय** – परियोजना के क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग।

विश्लेषण के चार स्तर –

1. **श्रम** – कार्य/दायित्व में होने वाले परिवर्तन, अपेक्षित कौशल के स्तर, श्रम, सामर्थ्य (कितने लोग, कितना काम कर सकते हैं) इत्यादि को संकेत करता है।
2. **समय** – परियोजना द्वारा होने वाले परिवर्तन कार्य को करने के लिए, आवश्यक समय को संकेत करता है।
3. **संसाधन** (भौतिक) - परियोजना के परिणामस्वरूप पूँजी/मूलधन (आय, जमीन, ऋण उपलब्धता, स्वास्थ्य आदि) में होने वाले परिवर्तन।
4. **सामाजिक – सांस्कृतिक तत्व** – परियोजना द्वारा होने वाले सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन।

हेण्ड आउट : 8 C

केस स्टडी

इन्दौर शहर से लगे एक गाँव में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही वर्गों के लोग रहते थे। यहाँ के पुरुष कन्स्ट्रक्शन का काम करते थे। कुछ के पास खेती है और पुरुषों की भागीदारी वहाँ की राजनीति में भी है। समुदाय के इन पुरुष प्रतिनिधियों द्वारा महिलाओं द्वारा बताई गई समस्याओं की बात पंचायत आदि की बैठक में की जाती है।

इस गाँव की महिलाओं की प्रमुख जिम्मेदारी घर-परिवार की है जिसमें बच्चों की देखभाल, खाना बनाना, साफ-सफाई, पशुओं की देखरेख आदि है। महिलाएँ दूसरे व्यवसायों में भी हाथ बँटाती हैं। कृषि में निंदाई-गुड़ाई, खेत पर पुरुष के लिए भोजन भेजना आदि। पानी और ईंधन (लकड़ी) जुटाने का काम सामान्यतः बच्चों द्वारा किया जाता है।

इस गाँव में महिलाएँ एम्ब्राइडरी और सिलाई का कार्य भी बहुत अर्से से कर रही हैं। एक प्रकार से यह कार्य पुश्तैनी तरीके से ही यहाँ किया जा रहा है। तैयार माल को घर के आदमी बाज़ार में बेचने जाते हैं। सतत शिक्षा के कार्यकर्ताओं द्वारा महिलाओं के इस हुनर को चिन्हित किया गया और यह तय किया गया कि इसे ही प्रोत्साहित किया जाए।

महिलाओं को एक ऐसी एम्ब्राइडरी मशीन से परिचित कराया गया जिससे काम जल्दी किया जा सकता था और वैसा ही जैसा वे अपने हाथों से करती हैं। सतत शिक्षा के कार्यकर्ताओं द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि उन्हें मशीन का उपयोग तो सिखाएँगे ही साथ ही इसे लोन पर दिलाने की व्यवस्था भी करेंगे। यह भी बताया गया कि मशीन से वे ज्यादा काम कर सकेंगी और घर पर ही कर सकेंगी । ज्यादा काम से बढ़ने वाली आमदनी से मशीन का लोन भी लौटाया जा सकता है। यहाँ के लोगों को अपना माल बेचने में अब तक कोई परेशानी नहीं थी और सतत शिक्षा के कार्यकर्ताओं द्वारा भी उन्हें यही समझाया गया कि बाजार में उनके माल की माँग है।

हेण्ड आउट : 8 D

जेण्डर एनालिसिस मेट्रिक्स के माध्यम से विकास परियोजना का विश्लेषण

	श्रम	समय	संसाधन	सांस्कृतिक–सामाजिक
महिला	- मशीन चलाने का कौशल सीखना होगा। + नया कौशल सीखें।	+ वही सामान कम समय में तैयार करना। - कौशल सीखने के लिये समय की आवश्यकता।	+ ज्यादा कमाई - कमाई पर अधिकार न होना	+ आत्मविश्वास बढ़ना
पुरुष	+ के लिये ज्यादा सामान - ज्यादा सामान बाजार ले जाना व बेचने में कठिनाई	+ सामान बेचने में ज्यादा समय लगना	+ ज्यादा सामान बेचकर ज्यादा कमाना.	- महिलाओं को नया कौशल सीखना तथा कमाने की क्षमता से असुरक्षित अनुभव करना
परिवार	+ महिलाएँ आसानी से काम कर सकती हैं - पुरुषों को पहले से ज्यादा काम करना	+ घर और बच्चों के लिये ज्यादा समय मिलना ? पुरुष घर में कम समय रहना	- परिवार की आमदनी बढ़ना	? महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन - पुरुष का महिलाओं पर संदेह करना
समुदाय	+ गाँवों में अधिक कौशल प्राप्त लोग - रोजगार कोई परिवर्तन नहीं	- स्थानीय राजनीति के लिये पुरुष के पास कम समय होना + स्थानीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ सकती है।	- समुदाय में ज्यादा पैसा आना	- पुश्तैनी कला का लोप होना

1. क्या ऊपर दर्शाये गये प्रभाव परियोजना के अनुकूल हैं व क्या उनकी जरूरत है ?
2. जो इस परियोजना में शामिल नहीं हैं उन पर परियोजना का प्रभाव क्या होगा ?
3. कोई अनपेक्षित परिणाम ।

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर, म.प्र.
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर, इन्दौर - 452 002

* दूरभाष : 2551917, 2574104 फैक्स : 2551573
मुद्रण : सिद्धार्थ आफसेट्स, इन्दौर